International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197
Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 950-951

भौतिकवाद के परिप्रेक्ष्य में वेदांत की प्रासंगिकता

डॉ० शारदा वंदना
मानविकी संकाय, स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड, भारत।

प्रस्तावना

भौतिकवाद भारतीय दार्शनिक चिंतन की एक धारा है। यह भारतीय दर्शन के रूप में प्राचीन काल से चला आ रहा है। भौतिकवाद की मान्यता है कि संपूर्ण सृष्टि के मूल में जड़ पदार्थ है और इस जड़ अथवा भौतिक पदार्थ द्वारा ही ब्रह्माण्ड की व्याख्या की जा सकती है। विश्व की समस्त चेतन–अचेतन वस्तुओं की उत्पत्ति और विनाश के मूल में जड़त्त्व निहित है। भौतिकवाद के अनुसार जड़त्व की विशेषता है कि उसमें गति अन्तर्निहित होती है, जिससे वह विभिन्न निर्जीव–सजीव वस्तुओं के रूप में विकसित होता है। भौतिकवाद के अनुसार विश्व की सृष्टि का आधार परमाणुवाद और विकासवाद है। विकासवाद के अनुसार जड़ विकसित होते हुए जीवन, चेतन और आत्मचेतन के रूप में अभिव्यक्त होता है।"[1]

वेदांत भारतीय संस्कृति का मूल स्रोत है। यह भूतकाल में उसका मूल स्रोत रहा है और अब भी है। वेदांत के स्रोत उपनिषद् हैं। उपनिषदों का मूल है ''मनुष्य इन्द्रिय सुख, संपत्ति तथा संसार के पदार्थों से स्थायी सुख प्राप्त नहीं कर सकता। सुख केवल मुक्ति में है और मुक्ति आध्यात्मिक ज्ञान से ही प्राप्त हो सकती है।" साधारणतः वेदांत को बुद्धिवादियों के बुद्धि विलास का विषय माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि व्यावहारिक जीवन में इसका कोई महत्व नहीं है। किन्तु वास्तविकता यह है कि वेदांत, आसक्ति, कामनाओं, स्वार्थसिद्धि और मनोविकारों के त्याग की प्रेरणा देता है। यह भाग व्यक्ति विशेष की निष्ठा और साधन की ही वस्तु नहीं है, अपितु समाज और विश्व, राष्ट्र और अंतरर्राष्ट्रीय जगत की समस्याएँ भी वेदांत की सामाजिक साधना द्वारा हल की जा सकती है। वर्तमान विश्व जाति, वर्ण, धर्म, संप्रदाय और वाद के टुकड़ों में विभक्त है। मनुष्य–मनुष्य से अलग होकर खड़ा है। वेदांतानुसार समाज तथा विश्व की अराजक संकटपूर्ण स्थिति का मूल कारण मनुष्य का सीमाबद्ध होकर सोचना है।"[2]

प्राचीन भारतीय दर्शन में भौतिकवाद तथा अध्यात्मवाद दोनों समान रूप से पाए जाते हैं। ऋग्वेद में प्रकृति को शक्ति पुंज माना गया है। ईश्वर किसी न किसी प्राकृतिक शक्ति की अभिव्यक्ति है। इसलिए वेदों में प्रकृति पूजा प्रमुख है। राधाकृष्णन ने भौतिकवाद के संबंध में कहा है कि ''ऋग्वेद की ऋचाओं में भी इसके अंकुर पाए जाते हैं। "प्राकृतिक शक्तियों के प्रति मानव की शुरू से ही श्रद्धा रही है। मनुष्य ईश्वर की आराधना इसलिए करता है कि उसे भौतिक सुख, स्वास्थ्य, धन एवं सौंदर्य की प्राप्ति हो। वैदिक युग में भौतिक सुख को महत्व दिया गया है तथा आध्यात्मिक अनुभूति को गौण स्थान दिया गया है। सोमरस का पान करना तथा ईश्वर को खुश करने के लिए नाचना–गाना भौतिकवादी मानसिकता है। वैदिक काल में ईश्वर की पूजा आध्यात्मिक उद्देश्य के लिए न होकर भौतिक सुखों के लिए की जाती रही है।

वैदिक कर्मकांडों का मूल उद्देश्य ब्रह्म से साक्षात्कार या मोक्ष प्राप्ति नहीं था, बल्कि इसका उद्देश्य जीवन के लिए उपयोगी अच्छी–अच्छी वस्तुएं, अच्छी संतानें, धन, गाय–बैल आदि प्राप्त करना या शत्रुओं का नाश करना था। जिन देवताओं की पूजा की जाती थी, वे प्रकृति के साधारण तत्व थे। विधिपूर्वक और बिना त्रुटि के मंत्रोच्चारण के साथ किया गया यज्ञ अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पर्याप्त माना जाता है। इस तरह वैदिक युग में मानव मस्तिष्क इस जगत की वास्तविकताओं के बहुत नजदीक था।"[3]

देवताओं के प्रसादन के लिए किए जाने वाले कर्मकांडों के साथ–साथ जादुई कर्मकांड भी जारी थे। मौसम के संबंध में जादुई भविष्यवाणी, वर्षा के लिए प्रार्थना, फसल अच्छी होने के लिए बलि चढ़ाई जाना, युद्धों में विजय के लिए जादुई अनुष्ठान ये सब धर्म के अंग बन गये थे। अथर्ववेद कितने ही जादुई संस्कारों, जादुई अनुष्ठानों और जादुई स्तुतियों से भरा है। टूटी हुई हड्डी को जोड़ने क लिए जादू होता था। फसलों में सुधार, बांझपन खत्म करने, यहां तक की बाल बढ़ाने के लिए भी जादू होता था। इस तरह की बातों से पता चलता है कि वैदिक युग में मानव मस्तिष्क इस जगत के वास्तविकताओं के बहुत नजदीक था। अपने इच्छित उद्देश्यों की पूर्ति के लए ही मनुष्य धार्मिक अनुष्ठान किया करते थे, जिससे आदिम कालीन भौतिकवाद की पुष्टि होती है।

डॉ. राधाकृष्णन लिखते हैंरू वैदिक विचारक जगत के उद्गम एवं स्वरूप संबंधी दार्शनिक समस्याओं की ओर से उदासीन नहीं थे। प्रत्येक परिवर्तनशील पदार्थ के आदिम आधार की खोज में उन्होंने प्राचीन विद्वानों के समान जल, वायु आदि को ही मौलिक तत्व के रूप में माना, जिनके परस्पर एकत्र होने से इस विविध जगत की उत्पति हुई। वैदिक युग के अनेक कवियों के विचारों में भौतिकवादी चिंतन की स्पष्ट झलक दिखलाई पड़ती है। डॉ भट्टाचार्य लिखते हैं, ''ऋग्वेद में बृहस्पति भारतीय भौतिकवाद के आदि प्रणेता माने जाते हैं। उन्होंने ही सर्वप्रथम पदार्थ को परम सत्य घोषित किया। वे आत्मा की अमरता और मृत्यु के बाद की जीवन की अवधारणा के भी विरोधी थे।"[4]

भारतीय दर्शन,धर्म, संस्कृति का मूल स्त्रोत वेद को माना जाता है। वेदों के ऋचाएं भारतीय दर्शन के प्राण हैं। वेद चार हैं– ऋक, यजु, साम और अथर्व। इन वेदों में भी ऋग् वेद का स्थान सर्वोत्तम है, क्योंकि ऋग् वेद में ही दार्शनिक तत्वों की विवेचना उपलब्ध है तथा यही सबसे पुराना वेद है। वेदों में कई ऐसे सूक्त हैं जिनके अनुसार यह संसार यथार्थ है और इसका उद्भव भी यथार्थ से हुआ है। ऐसे भी सूक्त मिलते है, जिनमें इन संसार का आधार पांच तत्व बताये गये हैं– पृथ्वी,जल, अग्नि, वायु और आकाश। इस तर यह संसार किसी परमेश्वर अथवा ब्रह्म की सृष्टि नहीं थी, बल्कि विकास की लंबी प्रक्रिया के बाद जिसमें किसी बाह्य शक्ति ने हस्तक्षेप नहीं किया था, इसका उदय हुआ। संसार की सृष्टि के बाद ही देवताओं का जन्म हुआ। उनका अस्तित्व पंचभूतों के कारण संभव हुआ। आरंभ काल में न तो अस्तित्व हीनता थी और न अस्तित्व चारों ओर अंधकार था। यह अंधकार भी अंधकार से घिरा हुआ था। संसार का

इस आदिम अवस्था में उद्भव हुआ, पहले केवल कोहरा था, फिर धुआं पैदा हुआ, उसके बाद सूर्य का उदय हुआ, फिर वायु, अग्नि, विद्युत,चंद्रमा आदि पैदा हुए। इस प्रकार हम देखते हैं कि यह संसार निश्चित रूप से भौतिक था और विकास में ईश्वर का कोई हाथ नहीं था।

वेदों में अन्न, सोम तथा अन्य वस्तुओं से संबंधित कई सूक्त हैं, जो प्रमाणिक करते हैं कि वैदिक कवियों के लिए इन भौतिक वस्तुओं का कितना महत्व था। अन्न को एक देवता के रूप में स्तवन किया गया है। यही नहीं इस शरीर को अन्न पर निर्भर बतलाया गया है, जिससे भौतिकवाद की पुष्टि होती है। अन्न की तहर अन्य भौतिक पदार्थो जैसे अग्नि, सोम आदि की भी स्तुति की गयी है।"[5]

अथर्ववेद सब वेदों में अर्वाचीन है तथा वेदों में यह चतुर्थ वेद है। इसमें विभिन्न सांसारिक शक्तियों यथा राजा, विवाह, बल और शरीर आदि के संबंध में मंत्र दिये गये हैं। अथर्ववेद के तृतीय अंक में 'जल' का वर्णन प्राच्य भौतिकवाद का समर्थन करता है। इसी प्रकार यजुर्वेद में अग्नि, अन्न, राजा के कर्तव्य, गृहस्थ के कर्तव्य, शत्रुनाश, योगाभ्यास आदि के लिए प्रार्थना की गई है। यजुर्वेद के 25वें अध्याय में शरीर की विभिन्न क्रियाओं या व्यापारों की तुलना की गई है। इस वेद के 26वें अध्याय में पृथ्वी, अग्नि और सूर्य आदि का वर्णन किया गया है।

इस तरह वेदों में प्रकृतिवाद को प्रतिष्ठित किया गया है। यहां न सिर्फ अन्न, जल, वायु, अग्नि, सोम आदि भौतिकवादी पदार्थों की प्रशंसा में गीत गाये हैं, बल्कि देवताओं को भी मनुष्य की तरह व्यवहार करते दिखलाया गया है, जिससे भौतिकवादी अवधारणा की ही पुष्टि होती है। यह संसार विविधताओं से भरा हुआ है। लेकिन इस विविधता के अंदर एकता है। प्रकृति के असंख्य क्रियाकलापों के पीछे एक एकता है। भौतिकवादी दृष्टिकोण से यह एकता ब्रहमांड की वास्तविकता एक पदार्थीय एकता है। भारत के प्राचीन भौतिकवादी दार्शनिक मानते थे कि समस्त वस्तुओं का उद्भव इस समूचे ब्रहमांड में अन्तनिर्हित एक ही भौतिक पदार्थ से हुआ है।

वेदांत का संदेश है कि हमारे अंदर और जगत की प्रत्येक वस्तु में परमात्मा का निवास है। वेदांत की पहली शिक्षा है ''मैं" को शरीर से भिन्न समझना तथा इस विषय में विश्वास का अभाव ही आधुनिक संसार की समस्त बुराइयों का चरम कारण है। यह वेदांतीय सत्य आधुनिक पदार्थ विद्या द्वारा भी सिद्ध हो चुका है कि समस्त शरीर एक ही तत्व द्वारा निर्मित है।"[6]

निष्कर्ष–

वर्तमान युग में जब विश्व में भौतिकवादी चिंतन अपने चरमोत्कर्ष पर है। हमारी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में विकृत प्रयोग किए जा रहे हैं तथा समाज को राह दिखाने वाला कोई स्पष्ट प्रकाश नहीं है, तो इसका समाधान हम वेदांतीय चिंतन प्रणाली में पा सकते हैं। वेदांत में एक ऐसी शिक्षा उपलब्ध है, जो वर्तमान युग में नई और न्यायपूर्ण जीवन व्यवस्था का आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आधार बन सकती है। वेदांत सिर्फ आध्यात्मिक उन्नति का साधन ही नहीं बल्कि भौतिक उन्नति के लिए भी वेदांत मजबूत आधार प्रदान कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ–

1. मिश्र, अर्जुन, दर्शन की मूल धाराएं
2. भट्टाचार्या, डी. हिस्ट्री ऑफ फिलोसॅफी, पेज न.–133
3. ऋग्वेद, मंडल–1, अध्याय 24, सूक्त–187, प. श्रीराम शर्मा द्वारा सम्पादित
4. प्राण उपनिषद्–1–7
5. सुबाल उपनिषद् –1–1, 21
6. तैत्तरीयोपनिषद, 108 उपनिषद् ज्ञान खंड, संपादक पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, पृष्ठ. 122–131
7. तैत्तरीयोपनिषद, 108 उपनिषद् ज्ञान खंड, संपादक पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, पृष्ठ. 122–131
8. जैकोबी, एच, जैन सूत्राज, पृष्ठ, 339–341
9. महाभारत शांति पर्व –श्लोक–26
10. डॉ राधाकृष्णनः भारतीय दर्शन–पेज–230
11. वही पेज–231